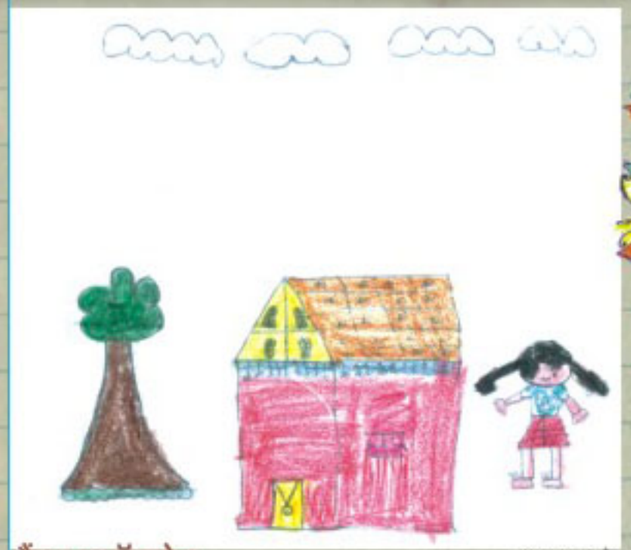

–अनुषा, उज्जैन

–शबनम बड़िया, आठवीं

बैंच पर कॉकरोच

एक दिन हम लोग क्लास में पढ़ रहे थे तभी एक लड़के की बैंच पर कॉकरोच आ गया तो वो जल्दी से मैडम से बोला कि मैडम हमारी बैंच में कॉकरोच है। तो मैडम ने बोला कि किसी और के साथ बैठ जाओ। वो तो बैठ गया लेकिन वो कॉकरोच पूरी क्लास में घूमने लगा। सब बच्चे अपनी बैंच पर चढ़ गए और हल्ला करने लगे, तभी एक लड़का आया और उस कॉकरोच को हाथ में लेकर फेंक दिया। उस दिन मुझे बहुत डर लगा।

–मानवी सोनी, छठवीं, दुर्ग

बिल्ली और बिल्ली के बच्चे

एक बहुत प्यारी बिल्ली थी जो एक बस्ती में रहती थी। वह एक घर से दूसरे घर तक जाकर अपना पेट भर लेती थी। मगर उसने अपने बच्चों को बस्ती से दूर जाकर जन्म दिया। वह सोचती थी, "अगर मैं अपने बच्चों को यहाँ जन्म दूँगी तो ये लोग मेरे बच्चों को मार देंगे।" वह अपने बच्चों से बहुत प्यार करती थी। उन्हें बहुत खुश रखती थी। उन पर कोई आँच नहीं आने देती थी। लेकिन जैसे-जैसे बच्चे थोड़े बड़े हुए उन्हें थोड़ी-थोड़ी देर में भूख लगने लगी। फिर बिल्ली को बस्ती से खाना ढूँढकर लाने में बहुत देर और बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। तब बिल्ली ने सोचा, "क्यों न मैं अपने बच्चों को बस्ती में ले जाऊँ। कहीं छुपाकर रख लूँगी।" जब बिल्ली अपने बच्चों को लाने गई तब बच्चे बड़ी खुशी से खेल रहे थे। जब बिल्ली उन्हें अपने दाँतों से उठाने लगी तब बच्चे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे – म्याऊँ-म्याऊँ। तब उसने सोचा, "मैं अपने बच्चों को खुश देखना चाहती हूँ। चाहे उसके लिए मुझे कितनी भी मेहनत करनी पड़े। मैं दूसरी बिल्लियों की तरह अपने बच्चों को छुपाकर बिना स्वतंत्रता के नहीं जीने दूँगी। मैं अपने बच्चों को स्वतंत्रता के साथ खुशी से जीने दूँगी।" यह थी बिल्ली और बिल्ली के बच्चों की कहानी।

– नाम, पता नहीं लिखा

तोता

हरे रंग का तोता,
बैठे-बैठे सोता।
जब पिंजड़ा खुल जाए,
जल्दी से उड़ जाए।

– तृषा ठाकुर, दूसरी, गाज़ियाबाद

गोल-मटोल

चन्दा गोल सूरज गोल
सारी दुनिया गोल-मटोल।
पृथ्वी गोल ग्रह भी गोल,
सारा संसार गोल-गोल
रसगुल्ला गोल जलेबी भी गोल,
लड्डू भी गोल-गोल।
आलू गोल टमाटर गोल,
सारी दुनिया गोल मटोल।
गेंदा गोल डलिया भी गोल,
सूरजमुखी भी गोल-गोल।
बॉल गोल फुटबॉल भी गोल,
रोटी गोल, बिन्दिया गोल।
सारी दुनिया गोल-मटोल।।

– अर्पिता द्विवेदी, तीसरी, अरुणाचल प्रदेश

–विशाल शर्मा, पाँचवीं, देवास, म. प्र.

खेल-खेल में

गर्मी की छुट्टियों में मैं और मेरे दोस्त ने बहुत मज़ा की। एक बार मैं और मेरा दोस्त क्रिकेट खेलने मैदान पर गए। मेरे एक दोस्त ने गेंद फेंकी और दूसरे ने गेंद बल्ले से मारी। मैं कैच झेलने गया तब मेरे पैर में काँच लगा और खून निकलने लगा। फिर दोस्त ने मुझे घर लाया। घर आने पर पापा मुझे अस्पताल ले गए। डॉ. काका ने पैर साफ किए। मलहमपट्टी की और मैंने 3-4 दिन कड़वी गोलियाँ खाईं। फिर मेरा पैर ठीक हुआ और फिर से मैं दोस्तों के साथ खेलने लगा।

–अजय राजू जाधव, तीसरी, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे अच्छा लगता है...

मुझे सैर करना अच्छा लगता है
और नीली चिड़ियों को बतियाते हुए सुनना।
मुझे देखना अच्छा लगता है
किसी पेड़ से पत्तों का गिरना।
मुझे सुनना अच्छा लगता है
नन्हे बच्चों का कहीं आसपास हँसना।
मुझे अच्छा लगता है
हरी घास पर लेटकर
आसमान को उड़ते हुए देखना।
और पास में कहीं तूफान को ढूँढना।
मुझे बच निकलना अच्छा लगता है
जब मेरी बहन मेरा दिन बरबाद करती है।
मुझे अच्छा लगता है वह मज़ा
जब पतझड़ के एक दिन
हम पत्तों पर से भागते हुए जाते हैं।
लेकिन सबसे ज़्यादा...
मुझे वह नज़ारा अच्छा लगता है
जब रात के लिए तारे निकल आते हैं।

–टिफनी विलेग्रेशिया, 12 वर्ष,
अमरीका
अनुवाद: तेजी ग्रोवर

–विजय गौर, देहरादून, उत्तराखण्ड

चलो चलो उड़ चलें आज हम
फूलों की उस घाटी में
जहाँ फूल ही फूल खिले हों
घाटी की उस माटी में

– अनुषा पाँचाल, उज्जैन, म. प्र.

चुहिया का घर

मैंने पहली बार चुहिया का घर देखा। उसे बिल कहते हैं। मैंने बिल के भीतर झांका। भीतर अँधेरा था। थोड़ी देर में एक चुहिया बिल से बाहर आई। मैं चिल्लाया - चुहिया चुहिया। वह बिल में चली गई। वह फिर बाहर आई। इस बार मैं नहीं चिल्लाया। फिर भी वह बिल में चली गई। वह कई बार बाहर आई। इधर-उधर घूम कर आती जाती रही। मैं भी कभी बार-बार घर से बाहर जाता हूँ तो मेरी मॉम डाँटती है। कहती हैं - क्यों बेकार में घूम रहा है। क्या चुहिया को भी उसकी मॉम डाँटती है?

- रितिक शर्मा, दूसरी, संगरिया, राजस्थान

राजा और ड्रैगन

एक बार एक राजा जंगल में जाता है। वहाँ उसको एक महल दिखताहै। फिर वो महल में जाता है। अन्दर उसको एक ड्रैगन दिखता है। और वहाँ दोनों में लड़ाई हो जाती है और लड़ते-लड़ते-लड़ते सुबह से शाम हो जाती है। और वो दोनों थक जाते हैं। फिर वो दोनों सोचते हैं कि हम लड़ाई क्यों कर रहे हैं। एक तरफ का कमरा राजा लेगा और एक तरफ का ड्रैगन लेगा। और वे दोनों अच्छे से रहने लगे।

- भावेश रतनानी, 12 साल, दुर्ग

हम मैस देखने गए

हम कक्षा तीन के बच्चे पेपर-मिल गए। हम मैस तथा कैन्टीन देखने गए। सब बच्चे कुर्सी पर बैठ गए। हम बच्चे प्रश्न पूछने के लिए गए। सब बच्चे प्रश्न पूछने लगे। उन्होंने बताया कि वो सब्जी में हल्दी, मिर्ची, धनिया, गर्म मसाला, प्याज, हरी मिर्च, लहसुन आदि डालते हैं। उन्होंने बताया कि वे 7 बजे आते हैं, 11 बजे जाते हैं। एक थाली भोजन का 15 रु. लेते हैं। और उन्होंने कहा कि एक थाली में 5 रोटी, दाल-चावल, सब्ज़ी, सलाद, अचार देते हैं। और वो 100 से 200 तक लोगों का खाना बनाते हैं और उन्होंने बताया कि 100 आदमियों के भोजन में 10 किलो चावल, 10 किलो आटा, 5 किलो सब्जी, 200 ग्राम नमक, 200 ग्राम मिर्ची आदि लगता है। उन्होंने बताया वहाँ पर शाकाहारी भोजन बनता है। और उनका वेतन 3500 रु. महीना है। और उन्होंने बताया कि यहाँ पर 5 लोग खाना और नाश्ता बनाते हैं। हमने पूछा कि नाश्ते में क्या-क्या बनता है तब उन्होंने बताया-

सुबह का नाश्ता
समोसा - 2 रु. का एक
गुलाब जामुन - 2 रु. का एक
जलेबी - 4 रु. का 100 ग्राम
ब्रेड पकोड़ा - 2 रु. का एक
हमने देखा एक रोटी का बहुत बड़ा तवा था। वो दो भागों में बँटा हुआ था एक पर रोटी को गर्म किया जाता है। एक पर रोटी को फुलाया जाता है।

- स्वेच्छा सिंह, तीसरी, फैज़ाबाद

- नाम, पता नहीं लिखा

पीला फूल

आज सुबह-सुबह में तालाब पर गई। मैंने मछली देखी। मछली अपना मुँह निकाले बैठी थी। बगीचे में एक फूल का रंग पीला था पर मुझे तो लाल फूल चाहिए था। क्योंकि मेरी सीहोर वाली मौसी का छोटा-सा बच्चा हुआ है न। उसे देने के लिए। पर मैं उसे पीला फूल ही दूँगी। घर गई तो मम्मी ने कहा कि फूल नहीं तोड़ना था। वह तो पेड़ पर ही सुन्दर दिखता है।

- नाम, पता नहीं लिखा

- आर. मेलुमणि, सातवीं, कोण्डमुत्तुनूर, तमिलनाडु